सदन में शहीदे आजम

असग़र वजाहत

सदन में शहीदे आजम

हमारे लोकतंत्र पर चारों तरफ से हमले हो रहे हैं। लेकिन हमारे प्रतिनिधि इन हमलों को नाकाम कर देते हैं। हो सकता है कि हमारे प्रतिनिधि अपनी सज्जनता और भोलेपन के कारण पहले हमलों को न समझ पाते हों लेकिन जब समझ जाते हैं तो जान पर खेलकर लोकतंत्र को बचा लेते हैं। दु:ख और चिंता की बात यह है कि उनके जान पर खेलकर लोकतंत्र बचाने के प्रयासों की सराहना उन्हें स्वयं ही करनी पड़ती है। जबकि यह काम जनता का है, लेकिन जनता आजकल क्रिकेट मैच, भौंडे टेलीविजन कार्यक्रम, शेयर मार्केट का उतार-चढ़ाव, सोने का बाजार, प्रापर्टी की कीमतों में हेर-फेर, बिना किए करोड़पति हो जाने के सपने ही देखती है। खैर, हमारे जनप्रतिनिधि किसी बात का बुरा नहीं मानते। वे मानते हैं कि जनता को न बदला जा सकता है, न वे किसी देश में जाकर जनप्रतिनिधि बन सकते हैं।

हमारे लोकतंत्र पर ताजा हमला एक बदबू ने कर दिया है। हमारे कर्मठ, समर्पित, प्रतिभावान प्रतिनिधि चाहते हैं कि सदन की कार्यवाही कम-से-कम साल में दो सौ दिन तो चले पर व्यवधान डालने वाले इस कार्यवाही को समेटकर सौ से भी कम के आंकड़े पर खड़ा कर देते हैं। इन दिनों सदन की कार्यवाही बहुत सुंदरता से चल रही थी कि अचानक सदन पर बदबू ने हमला कर दिया। यदि हमला करने वाला कोई और होता तो हमारे प्रतिनिधि सीना तानकर खड़े हो जाते। लेकिन चूंकि हमलावर अदृश्य था इसलिए हमारे प्रतिनिधि विवश हो गए। पर यह बहस चलने लगी कि यह दुर्गंध कैसी है! कुछ ने कहा, यह गैस की बदबू है। इस पर पूछा गया किस कंपनी की गैस की बदबू है। थोड़ा खुलकर कंपनी का नाम बताया जाए। बदबू से कंपनी का नाम बता देना सरल था लेकिन सदन खामोश रहा। बहस यह होने लगी कि दुर्गंध कब से आ रही है। एक सदस्य ने कहा कि वह जब से जनप्रतिनिधि चुनकर आया है तब से उसे यह दुर्गंध आ रही है। इस पर पूछा गया कि उसने इससे पहले दुर्गंध की शिकायत क्यों नहीं की? प्रतिनिधि ने बताया कि वह तो दो साल पहले ही चुनकर आया है। उसे लगा था कि शायद जिसे वह दुर्गंध समझ रहा है वह दुर्गंध नहीं सुगंध है जिसे सदन में बड़े प्रयासों से फैलाया गया है। नए सदस्य के इस वक्तव्य पर कुछ दूसरे सदस्य नाराज हो गए और उन्होंने नए सदस्य पर जातिवादी होने का आरोप लगाया। अब बहस जातीय आधार पर बंट गई और जाति-विशेष की तरफ इशारे होने लगे। बहस को लाइन पर लाते हुए एक अनुभवी सदस्य ने कहा कि पिछले पच्चीस साल से वह यह दुर्गंध महसूस कर रहा है। बात पीछे खिसकते-खिसकते यहां तक पहुंची कि अंग्रेज जब हमारे देश को आजाद करके गए थे तब से यह दुर्गंध सदन में है। यह अंग्रेजों द्वारा छोड़ी गई दुर्गंध है। इस मत का पूरे सदन ने समर्थन किया और कहा गया कि विदेश मंत्रालय इस पर सख्त कार्यवाही करे और ब्रितानी सरकार से कड़े शब्दों में पूछा जाए कि यह क्या मामला है। कुछ सदस्य बदबू के ब्रितानी षड्यंत्र होनेवाले बिंदु से इतना उत्तेजित हो गए कि उन्होंने कहा कि अंग्रेज तो जो भी छोड़ गए सबसे बदबू आती है। रेल की पटरियां गंधाती हैं, गेटवे ऑफ इंडिया से लेकर इंडिया गेट तक बदबू-ही-बदबू है। नौकरशाही से दुर्गंध आती है। आई.पी.सी. से सड़ी गंध आती है। शिक्षा-व्यवस्था की हालत तो गंदे नाले जैसी है। सदन